UGC NET JRF... Paper =2 Sanskrit

Filler Form

YouTube

UNIT=2

Class-12

By=NIDHU CHAUDHARY

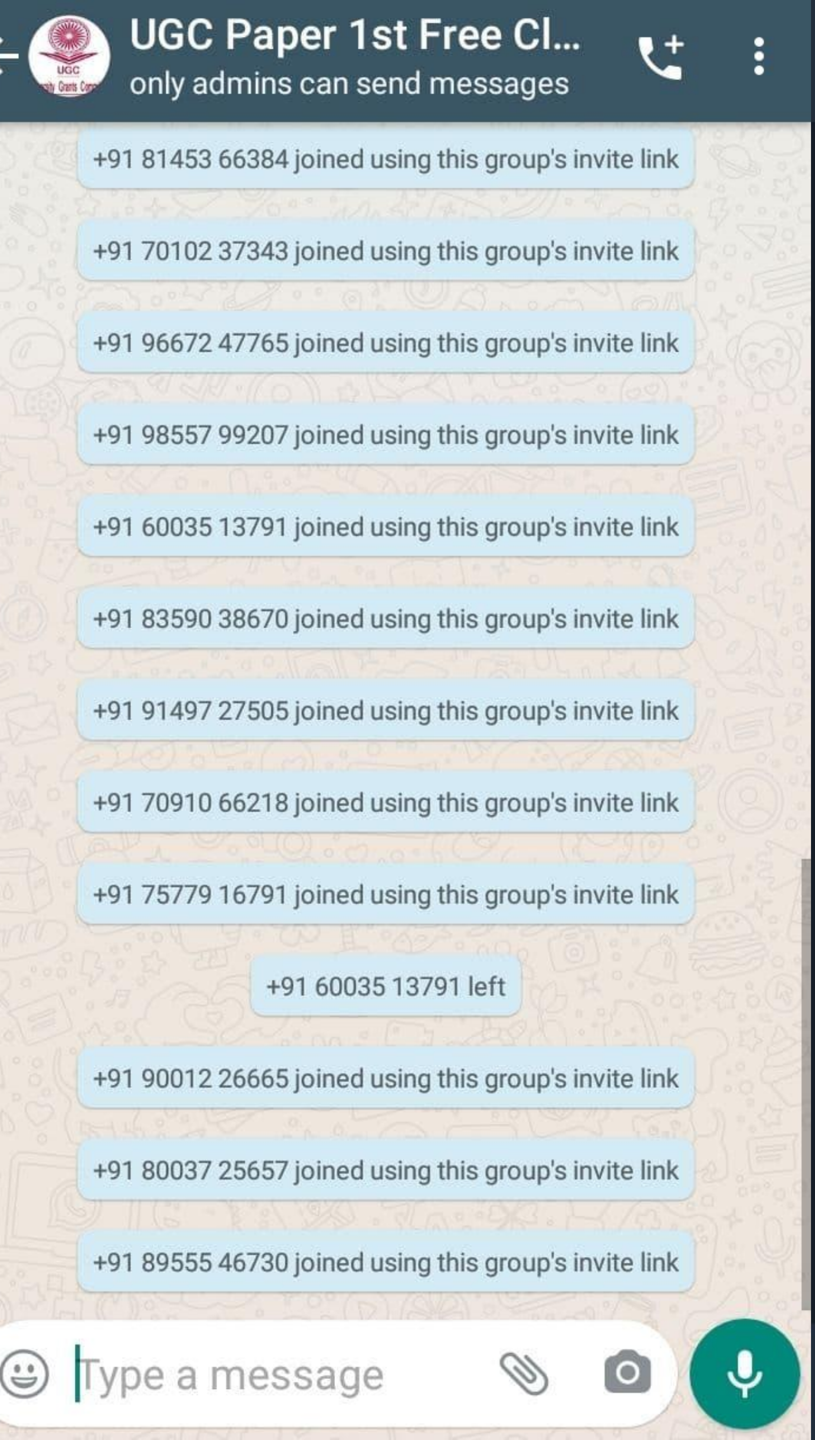
UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
+91 81453 66384 joined using this group's invite link
+91 70102 37343 joined using this group's invite link
+91 96672 47765 joined using this group's invite link
+91 98557 99207 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 joined using this group's invite link
+91 83590 38670 joined using this group's invite link
+91 91497 27505 joined using this group's invite link
+91 70910 66218 joined using this group's invite link
+91 75779 16791 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 left
+91 90012 26665 joined using this group's invite link
+91 80037 25657 joined using this group's invite link
+91 89555 46730 joined using this group's invite link
Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers
December 28
Channel created
Channel photo changed
UGC
Broadcast

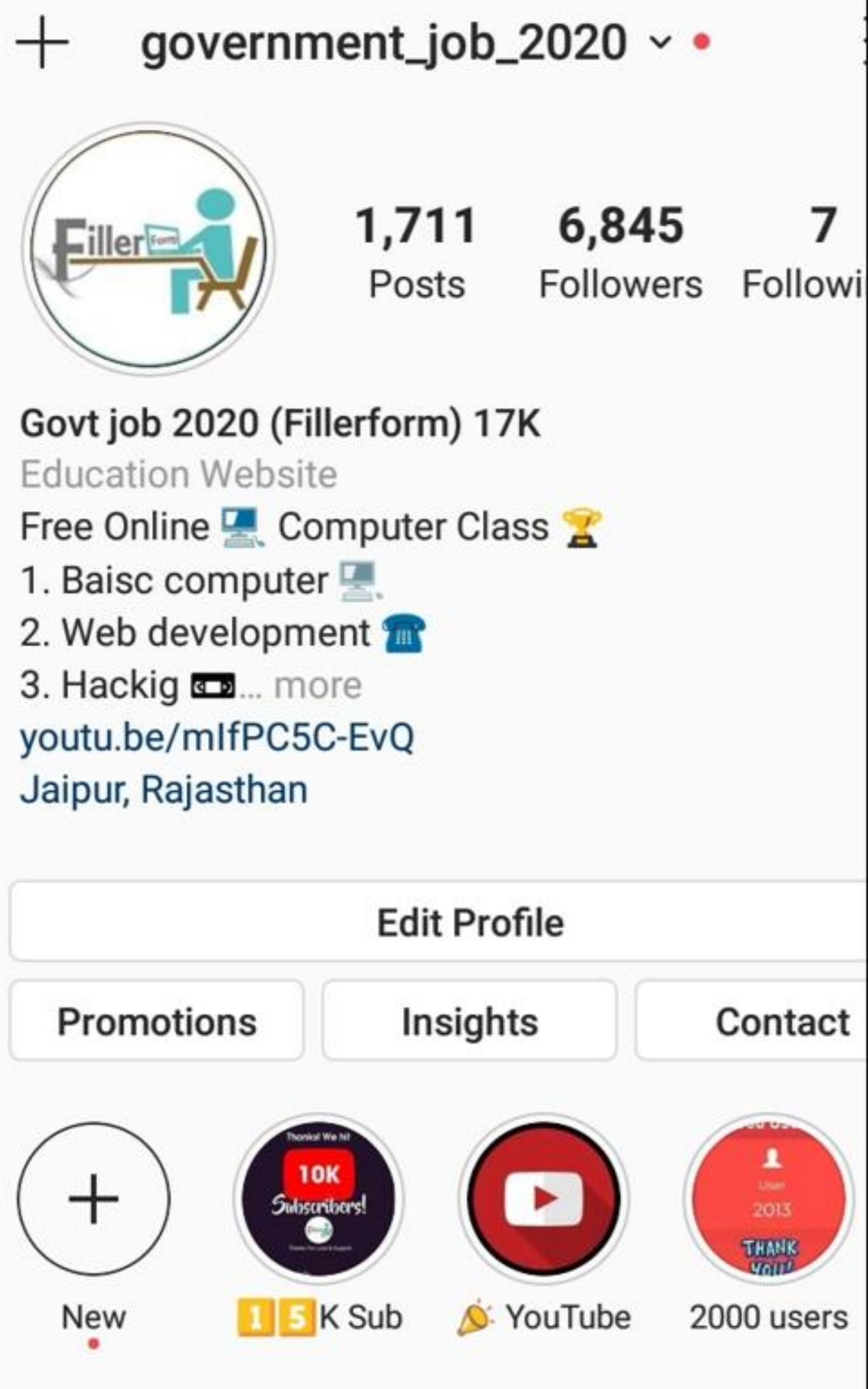
government_job_2020
1,711
Posts
6,845
Followers
7
Followi
Govt job 2020 (Fillerform) 17K
Education Website
Free Online Computer Class
1. Baisc computer
2. Web development
3. Hackig ... more
youtu.be/mIfPC5C-EvQ
Jaipur, Rajasthan
Edit Profile
Promotions
Insights
Contact
New
15K Sub
YouTube
2000 users

UGC NET 100% Off Free Class

- Free Notes
- Live Class
- 5000+MCQ+PYQ
- Free Books

100% OFF

fillerform

8209837844
www.ugc-net.com

Unit_2 वैदिक साहित्य का विशिष्ट अध्ययन

- = ऋग्वेद : एक परिचय
- = ऋग्वेद - संहिता सूक्त
- = शुक्लयजुवेद -संहिता सूक्त
- = कृष्ण यर्जुर्वेद - एक परिचय
- = अथर्ववेद -संहिता सूक्त
- = बाह्मण- साहित्य विधि एवं उनके प्रकार

= उपनिषद् - साहित्य वैदिक व्याकरण,

= निरूक्त एवं वैदिक व्याख्या- पद्धति

8209837844

www.ugc-net.com

बाह्मण- साहित्य विधि एवं उनके प्रकार

ब्राह्मण साहित्य का वर्गीकरण अपने में कोई अन्य ही है।

ब्राह्मणों के अन्तिम भाग को आरण्यक की संज्ञा दी गयी है।

कुछ उपनिषद् विशेषकर तैत्तिरीय, ऐतरेय, बृहदारण्यक एवं छान्दोग्य अपने आरण्यों के अन्त में अभिहित हैं।

आधुनिक युग में ब्राह्मणों, आरण्यकों तथा उपनिषदों को उनकी पृथक्-पृथक् ही आकलित किया जाता है।

8209837844

www.ugc-net.com

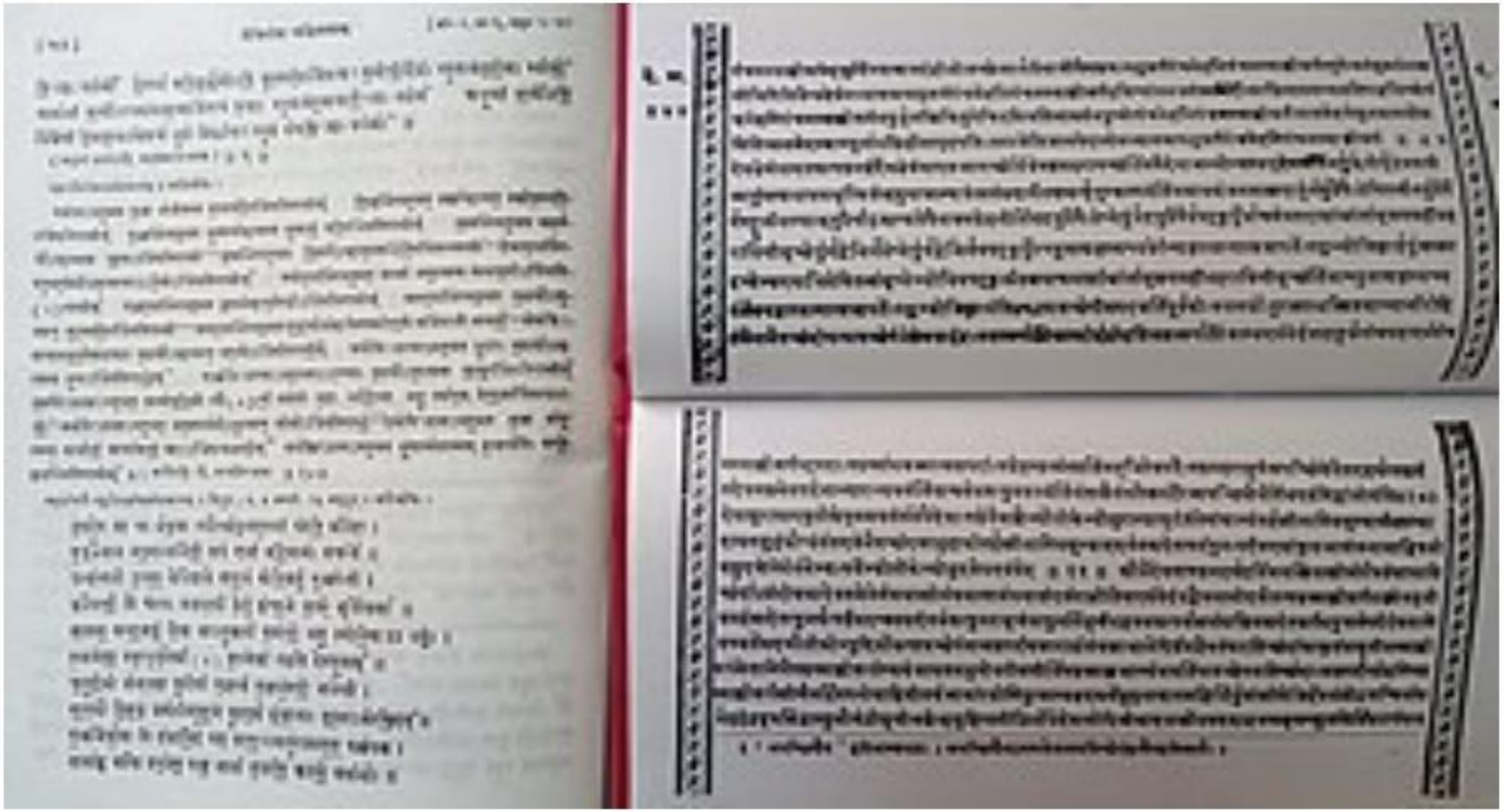

ब्राह्मण ग्रंथों का एक उदाहरण। बाएं तैत्तिरीय संहिता; जिसमें मंत्र मोटे अक्षरों में हैं और जबकि दाहिने भाग में ऐतरेय ब्राह्मण का एक अंश।

8209837844 www.ugc-net.com

ब्राह्मण जाति आदि के लिये देखें: ब्राह्मण , पुरोहित।

वेदोक्त ब्राह्मणादि कर्मकांड लिए देखें: कल्प (वेदांग)।

वेदों का गद्य में व्याख्या वाला खण्ड **ब्राह्मण** कहलाता है। वरीयता के क्रम में ब्राह्मण, वैदिक वाङ्मय का दूसरा भाग है। इसमें गद्य रूप में देवताओं की तथा यज्ञ की व्याख्या की गयी है और मन्त्रों पर भाष्य भी दिया गया है। इनकी भाषा वैदिक संस्कृत है। चारों वेदों का एक या एक से अधिक ब्राह्मण हैं (हर वेद की अपनी अलग-अलग शाखा है)। आज जो ब्राह्मण उपलब्ध हैं वे निम्नलिखित हैं-

8209837844 www.ugc-net.com

- **ऋग्वेद** :
  - ऐतरेयब्राह्मण-(शैशिरीयशाकलशाखा)
  - कौषीतकि-(या शांखायन) ब्राह्मण (बाष्कल शाखा)
- **सामवेद** :
  - प्रौढ(पंचविंश) ब्राह्मण
  - षडविंश ब्राह्मण
  - आर्षेय ब्राह्मण
  - मन्त्र (या छान्दिग्य) ब्राह्मण
  - जैमिनीय (या तावलकर) ब्राह्मण

8209837844
www.ugc-net.com

- यजुर्वेद
  - **शुक्ल यजुर्वेद** :
    - शतपथब्राह्मण-(माध्यन्दिनीय वाजसनेयि शाखा)
    - शतपथब्राह्मण-(काण्व वाजसनेयि शाखा)
  - **कृष्णयजुर्वेद** :
    - तैत्तिरीयब्राह्मण
    - मैत्रायणीब्राह्मण
    - कठब्राह्मण
    - कपिष्ठलब्राह्मण
- **अथर्ववेद** :
  - गोपथब्राह्मण (पिप्पलाद शाखा)

8209837844

gc-net.com

ब्राह्मण-साहित्य

प्रतिपाद्य विषय

ब्राह्मण-ग्रंथों में अनेक प्रकार के यज्ञों, विविध प्रकार के अनुष्ठानों, आख्यानों, कर्ममीमांसादि विविध शास्त्रों के अभ्युदय की कथाओं का विवेचन किया गया है। ब्राह्मण-ग्रंथों में प्रतिपाद्य विषय को तीन भागों में बाँटा गया है—1. विधि, 2. अर्थवाद और 3. उपनिषद्। इसकी संस्कृत-भाषायी विवेचना इस प्रकार हैं—

(i) **विधिः**—अस्मिन् ग्रन्थे यज्ञाय, तत्सम्बद्धकर्मकलापाय नियमाः निर्दिष्यन्ते। 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' अर्थात् यज्ञानुष्ठानमस्माकं महत्तमं कर्म विद्यते, अस्य उद्घोषो विधिभागस्य प्राणः। वेद-मन्त्राणां विश्लेषणं अथवा व्याख्याकरणं तथा वैदिक पदानां व्याख्यानमपि ब्राह्मणानां विधिभागस्य मुख्यो विषयोऽस्ति। अतः विधिरेव ब्राह्मणाणां मुख्य विषयोऽस्ति।

(ii) **अर्थवादः**—अर्थवादे निन्दायाः तथा प्रशंसाया उभयोरेव निवेशो दृश्यते। यथा यज्ञे 'माष' निषिद्धत्वात् माषस्य निन्दा 'अमेध्यावै भाषा' तथा 'वहिष् पवमान' स्तोत्रस्य उपादेयत्वकारणात् स्तुति कृताऽस्ति।

(iii) **उपनिषद्**:—यस्मिन् आध्यात्मिकानामेवं दार्शनिक-विचाराणां समावेशोऽस्ति अस्मिन् भागे विद्याऽविद्ययोः ईश्वर-जीवयोः माया-जगतोः एव महत्त्वपूर्णतत्त्वानां सन्दर्भे विचाराः प्रस्तूयन्ते। मनुष्याणां जरामरणयोः व्याधेः मुक्त्यर्थ विधानानि उपनिषद्भागे द्रष्टव्यानि सन्ति।

विधि एवं उनके प्रकार

- विधिः = यज्ञ का अनुष्ठान का उपदेश एव विधि।
- विधेः प्रकाराः = ४ प्रकार

१ उत्पति विधि

२ विनियोग विधि

३ अधिकार विधि

४ प्रयोग विधि

8209837844 www.ugc-net.com

यज्ञ एवं उनके प्रकार

-भारतीय जीवन में यज्ञ का महत्व प्राचीन काल से ही है।

-भारतीय संस्कृति यज्ञमयी हैं।

-बाह्मण-ग्रंथ में यज्ञ का पूर्ण साम्राज्य शतपथब्राह्मण में वर्णित हैं ' यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'अथात... सर्व कर्म यज्ञ ओर सर्वश्रेष्ठ कर्म विधते।

= यज्ञस्य प्रकार
१ अग्निहोत्र – यज्ञ
२ अग्निष्टोम –यज्ञ
३ दर्शपौणमास –यज्ञ
४ शुनःशेपाख्यानम्
५ वाङमनसाख्यानम्

8209837844
www.ugc-net.com

उपनिषद् - साहित्य वैदिक व्याकरण

💥 आपको ये क्लास कैसा लगा ??

📝Comment box में अपना comment कर के Next Class में आपका solution पाए 🗐 📝

For More Information

www.ugc-net.com

/Fillerform /Fillerform /Fillerform

info@fillerform.com

8209837844

THANK YOU